IOSR Journal of Research & Method in Education (IOSR-JRME)
e-ISSN: 2320–7388, p- ISSN: 2320-737x Volume 10, Issue 6 Ser. I (Nov. – Dec. 2020), 64-67
www.iosrjournals.org

उदारवाद
(LIBERALISM)

डॉ0 राधिका देवी
विभागाध्यक्ष(राजनीति विज्ञान)
ए0के0पी0(पी0जी0) कॉलिज, खुर्जा
जिला–बुलन्दषहर (उ0प्र0)

प्राचीनकाल से ही दार्शनिकों तथा विचारकों के द्वारा राज्य के स्वरूप, उसके कार्य–क्षेत्र तथा व्यक्ति व राज्य के प्रारम्भिक सम्बन्धों पर विचार किया जाता रहा है। इन विषयों पर प्रतिपादित विचारधाराओं को ही राजनीतिक विचारधाराएँ कहा जाता है। राज्य के स्वरूप, राज्य का कार्य–क्षेत्र तथा व्यक्ति व राज्य के पारस्परिक सम्बन्धों के विषय में विचारकों के अलग–अलग दृष्टिकोण रहे हैं। जिसके फलस्वरूप अनेक पृथक् व भिन्न धारणाओं का विकास हुआ। आधुनिक युग में उदारवाद, समाजवाद, मार्क्सवाद, अधिनायकवाद तथा गाँधीवाद प्रमुख राजनीतिक विचारधाराएँ हैं।

आधुनिक युग की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विचारधारा है–उदारवाद। उदारवाद मानव प्रकृति पर आधारित एक व्यापक विचारधारा है। अन्य राजनीतिक विचारधाराओं के समान उदारवाद एक निश्चित और क्रमबद्ध विचारधारा नहीं है और न ही यह विचारधारा किसी एक राजनीतिक, वैज्ञानिक या किसी एक युग की देन है। उदारवादी विचारधारा जीवन के प्रति एक विशिष्ट दृष्टिकोण रखती है। उदारवाद का मूल लक्ष्य व्यक्ति की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का प्रतिपादन करना है। अनेक देशों की जीवन–पद्धति और दर्शन पर उदारवाद का प्रभाव पड़ा है। **जॉन लॉक, मॉण्टेस्क्यू, बेन्थम, जे.एस. गिल, एडम स्मिथ, टी.एच.ग्रीन, लास्की, बेवरिज आदि उदारवाद के प्रमुख विचारक है। भारतीय विचारक गोपालकृष्ण गोखले तथा महादेव गोविन्द रानाडे** उदारवादी विचारक है।

उदारवाद अंग्रेजी भाषा के शब्द 'लिबरालिज्म' (Liberalism)का हिन्दी रूपान्तर है। 'लिबरालिज्म' शब्द की उत्पति लैटिन भाषा के शब्द 'लिबर' (Liber)से हुई है जिसका अर्थ है स्वतन्त्र व्यक्ति(Free Man)इस रूप में उदारवाद वह विचारधारा है जो व्यक्ति की स्वतन्त्रता का प्रतिपादन करती है। उदारवाद की मूल मान्यता यह है कि ''व्यक्ति को बिना किसी अनुचित हस्तक्षेप के अपने भाग्य का निर्णय करने का अधिकार प्राप्त होना चाहिए।'' उदारवाद का उद्देश्य एक ऐसे सामाजिक व राजनीतिक तथा आर्थिक वातावरण से है जिसमें रहकर व्यक्ति अपनी स्वतन्त्रता और मान–मर्यादा की रक्षा कर सके। इस प्रकार उदारवाद व्यक्ति की स्वतन्त्रता का दर्शन है।[1]

हॉबहाउस ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'उदारवाद' में लिखा है कि ''उदारवाद की मान्यता यह है कि व्यक्ति एक यन्त्र न होकर सजीव आत्मा है। एक सजीव व्यक्ति को अपने विकास के लिए स्वतन्त्रता का वातावरण चाहिए।''[2]

प्रो. लास्की के शब्दों में, ''उदारवाद की व्याख्या करना व उसकी परिभाषा देना सरल नहीं है, क्योंकि यह सिद्धान्तों का समूह न होकर मस्तिष्क में स्थित विचार मात्र है।''[3]

एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार, ''उदारवाद के विचारों का सार स्वतंत्रता का सिद्धान्त है।'' सारटोरी के शब्दों में, ''साधारण शब्दों में उदारवाद व्यक्तिगत स्वतंत्रता, न्यायिक सुरक्षा तथा संवैधानिक राज्य का सिद्धान्त व व्यवहार है।''[4]

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि उदारवादी विचारधारा व्यक्ति को साध्य तथा राज्य का साधन मानती है। यह विचारधारा स्वतन्त्रता की प्रबल समर्थक है, तथा व्यक्ति के जीवन के सभी क्षेत्रों में उसकी स्वतन्त्रता का समर्थन करती है।

उदारवाद के उदय के कारण
(CAUSES OF RISE OF LIBERALISM)

राजनीतिक चिन्तन के क्षेत्र में उदारवाद के उदय के महत्वपूर्ण कारण निम्नलिखित हैं–

- **औद्योगिक क्रान्ति तथा पूँजीपति वर्ग का उदय–** अठारहवीं सदी के अन्त में हुई औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार में वृद्धि हुई। वस्तुओं को बड़े पैमाने पर उत्पादन

आवश्यक हो गया। इसके लिए बड़े–बडे कारखानों के लगाये जाने की आवश्यकता हुई तथा उन्हें चलाने वाले एक समृद्धशाली वर्ग जिसे पूँजीपति वर्ग कहा जाता है, का जन्म हुआ। जीवन के मूल्यों का बलिदान करके भी धनार्जन किया जाना ही इनका उद्देश्य था। पूँजीपति वर्ग ने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपने प्रभाव से समाज से इस बात को मनवा लिया कि व्यक्तियों के आर्थिक जीवन और गतिविधियों पर सामाजिक, राजनीतिक तथा नैतिक प्रतिबन्ध नहीं होने चाहिए क्योंकि यह प्रतिबन्ध उसके धनार्जन के मार्ग में बाधक थे। इस आर्थिक स्वतन्त्रता की भावना ने उदारवाद को जन्म दिया। इस सम्बन्ध में लास्की का कथन है कि ''मध्यकाल के अन्त में नवीन समाज के उदय के कारण उदारवाद की उत्पत्ति हुई है।''

- **नवजागरण**–प्राचीन काल में यूनान में व्यक्ति को सर्वाधिक महत्व प्राप्त था। उस समय उनका चिन्तन लौकिक था। प्राचीन काल में यूनानियों ने विज्ञान, दर्शन, राजनीति, साहित्य व कला के क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति की थी। मध्य युग में व्यक्ति को भुला दिया गया तथा रूढ़िवादी धार्मिक चिन्तन को अपनाया गया। अन्धविश्वास तथा आधुनिक युग में यूनानी चिन्तन पर पुनः दृष्टि पड़ने के कारण पुर्नजागरण या नवजागरण नाम का आन्दोलन चला। इस आन्दोलन से व्यक्ति के विचार, आदर्श तथा जीवन के प्रति व्यक्ति का दृष्टिकोण बुद्धि व विवेक प्रधान हो गया। व्यक्ति का दृष्टिकोण पुनः लौकिक हो गया। जिसके परिणामस्वरूप उसका उद्देश्य मानव जीवन को सुखी बनाना हो गया। नवजागरण से यह विचार विकसित हुआ कि व्यक्ति ही वह आधार है जिसे केन्द्र मानकार सुदृढ़ समाज की व्यवस्था की स्थापना की जा सकती है। व्यक्ति का कल्याण ही समाज तथा राज्य का उद्देश्य है। इस स्थिति में व्यक्ति की स्वतन्त्रता आवश्यक हो गई तथा उदारवाद का उदय हुआ। नवजागरण आन्दोलन के परिणामस्वरूप व्यक्ति राजनीतिक जीवन का केन्द्र–बिन्दु बन गया।

- **धर्म सुधार आन्दोलन**–मध्य युग में न केवल राजनीतिक वरन् लौकिक क्षेत्र में पोप की निरकुंशता थी। उस समय यह माना जाता था कि पोप शास्त्रों का जो अर्थ बताते हैं, वही प्रामाणिक है। धर्म के मामलों में व्यक्ति स्वतन्त्र नहीं था वरन् पोप का दास था। सोलहवीं सदी में मार्टिन लूथर, ज्विगली तथा काल्विन आदि धर्म सुधारकों ने धार्मिक निरंकुशता का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। धर्म सुधारकों का विचार था कि धर्म व्यक्ति के व्यक्तिगत विश्वास की वस्तु है। अतः धर्म के सच्चे पालन के लिए व्यक्ति का पूर्ण स्वतन्त्र होना आवश्यक है। इस प्रकार धर्म सुधार आन्दोलन ने व्यक्ति की धार्मिक स्वतन्त्रता का प्रतिपादन किया जिससे उदारवादी विचारधारा का जन्म हुआ। लास्की के अनुसार, ''धर्म सुधार आन्दोलन के सिद्धान्त तथा सामाजिक परिणाम व्यक्ति के लिए मुक्तिदायक सिद्ध हुए।''

- **निरंकुशवाद के विरूद्ध प्रतिक्रिया**–उदारवाद के उदय का एक प्रमुख कारण निरंकुशतावादी शासन के विरूद्ध प्रतिक्रिया है। सोलहवीं व सत्रहवीं शताब्दी का समय यूरोप के इतिहास में निरंकुश राजतन्त्र के लिए प्रसिद्ध था। इनमें से कुछ सरकारें तो इतनी अधिक निरंकुश हो गई कि प्रजा के जीवन के लिए छोटी से छोटी बातों का निर्धारण करना अपना अधिकार मानने लगीं। **आशीवदिम** के शब्दों में, ''उनके अर्थहीन कानून निश्चित दिनों के लिए विशिष्ट प्रकार के भोजन निर्धारित करते थे तथा मुर्दों को दफनाने के लिए विशेष प्रकार के वस्त्रों की व्यवस्था की आज्ञा देते थे।'' स्वाभाविक रूप से इस प्रकार के निरंकुशतावादी शासन के विरूद्ध प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई। इंग्लैण्ड तथा फ्रांस की क्रान्तियों ने निरंकुश शासन का प्रबल विरोध किया। परिणामस्वरूप उदारवादी विचारधारा का अभ्युदय हुआ।[5]

उदारवाद काविकास
(EVOLUTION OF LIBERALISM)

प्राचीन युग तथा मध्य युग में व्यक्ति के राजनीतिक जीवन पर राजा का, धार्मिक जीवन पर कैथोलिक चर्च का तथा आर्थिक जीवन पर सामन्तों का अंकुश था। उस समय उत्पादन का प्रमुख स्रोत खेती थी जिस पर सामन्तों का अधिकार था। कृषक उत्पादन कार्य करते थे, उनकी स्थिति दासों जैसी थी। उस युग की राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था में 'व्यक्ति' का कोई मूल्य नहीं था।

आधुनिक युग के प्रारम्भ में 'नवजागरण' और 'धर्म सुधार'नामक दो आन्दोलनों का जन्म हुआ जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति के विचारों और आदर्शों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। व्यक्ति का धार्मिक संस्थाओं से विश्वास समाप्त होने लगा। व्यक्ति धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष करने लगा। राष्ट्रीय राज्यों का निर्माण हुआ तथा निरंकुश राजतन्त्र की स्थापना हुई।

राजनीतिक उदारवाद

सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी में शासकों के द्वारा निरंकुश शक्तियाँ ग्रहण करने के कारण जनता इन शासकों के विरूद्ध हो गई। धार्मिक उदारवाद ने अब राजनीतिक उदारवाद का रूप ग्रहण कर लिया। सत्रहवीं सदी में व्यापारी

वर्ग ने देवी सिद्धान्त पर आधारित राजा की निरंकुश शक्तियों का विरोध किया। राजनीतिक उदारवाद के जन्मदाता जॉन–लॉक ने अपने राजनीतिक दर्शन के द्वारा व्यक्ति के जीवन, स्वतन्त्रता और सम्पत्ति के अधिकारों को प्राकृतिक अधिकार सिद्ध कर व्यापारी वर्ग का समर्थन किया। इस तरह राजनीतिक उदारवाद का जन्म हुआ। इंग्लैण्ड की गौरवपूर्ण क्रान्ति, फ्रांस की राज्य क्रान्ति तथा अमेरिका का स्वतन्त्रता संग्राम राजनीतिक उदारवादी विचारधारा का ही परिणाम था। राजनीतिक उदारवाद ने शासन के हस्तक्षेप को कम करने पर बल दिया। राजनीति के क्षेत्र में उदारवाद ने निम्नलिखित सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया–

● लोकसत्ता का सिद्धान्त(Theory of Popular Sovereignty)●लोकमत का सिद्धान्त(Theory of Public Opinion),●प्रतिनिध्यात्मक प्रजातन्त्र(Representative Democracy), ● स्वतन्त्रता स्वायत शासन के आदर्श का विस्तार(Ideal of Local Self-government)।

आर्थिक उदारवाद

सोलहवीं शताब्दी में यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति हुई जिससे पूँजीपति वर्ग का उदय हुआ। एडम स्मिथ, माल्थस, रिकार्डो आदि अर्थशास्त्रियों ने पूँजीवाद को बहुत बढ़ावा दिया। ये विचारक अहस्तक्षेप–नीति के समर्थक थे। उन्होंने उदारवाद के आर्थिक पक्ष पर बल दिया। पूँजीपतियों के द्वारा सामाजिक हितों का परित्याग कर मनमाने तरीके से सम्पत्ति अर्जित की गई। उदारवादी विचारधारा ने आर्थिक क्षेत्र में निम्नलिखित सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया–

● उत्पादन का एकाधिकार, ● स्वतन्त्र व्यापार, ● अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, ● उपनिवेशों की स्थापना।

उदारवाद की नवीन प्रवृत्तियाँ– उदारवाद का अहस्तक्षेप की नीति का सिद्धान्त श्रमिकों व जनसाधारण के लिए दुःखदायी बनता जा रहा था। अतः बेन्थम, जे.एस.मिल, टी.एच.ग्रीन आदि विचारकों ने इसका विरोध किया तथा उदारवाद को नवीन स्वरूप प्रदान किया। बेन्थम ने 'अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख' के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। जे. एस.गिल जो उदारवाद का कट्टर समर्थक था, ने विचार व कार्यों की स्वतन्त्रता तथा लोकतन्त्र का प्रबल समर्थन किया। टी.एच.ग्रीन ने राज्य के कार्यों को सकारात्मक रूप प्रदान किया। रहन–सहन के स्तर तथा गरीबी के उन्मूलन के लिए ग्रीन ने राज्य के हस्तक्षेप को उचित ठहराया। उन्नीसवीं शताब्दी में उदारवादी विचारधारा में निम्न संशोधन किये गये–

● राज्य को व्यक्ति के विकास का साधन माना गया, ● राज्य के कार्य–क्षेत्र में वृद्धि हुई, ● राज्य के सकारात्मक स्वरूप पर बल दिया गया, ● व्यक्ति की स्वतन्त्रता को महत्व।

लोक–हितकारी राज्य की स्थापना–1917ई. में रूस में हुई साम्यवादी क्रान्ति तथा फांसीवाद के उदय ने राजनीतिक अशान्ति, आर्थिक व सामाजिक भेद–भाव तथा श्रमिकों के शोषण को जन्म दिया जिससे उदारवाद को खतरा उत्पन्न हुआ। लास्की, बार्कर, कोल, मैकाइवर आदि विचारकों ने उदारवाद का लोक–कल्याणकारी राज्य की धारणा से सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया। उनका मत था कि आर्थिक व सामाजिक परिस्थितियों में सुधार राज्य के कार्यों में वृद्धि करके, मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाकर ही किया जा सकता है। इस प्रकार, अब उदारवाद की लोक–हितकारी धारणा को अपनाया गया है।

आधुनिक युग में एक नये उदारवाद का जन्म हुआ है जिसे नव–उदारवाद के नाम से जाना जाता है। इसमें पूँजीवाद तथा समाजवाद दोनों का समावेश है। आर्थर ऑकन, चैपमैन, जॉन शेल्स नव–उदारवादी विचारक है। इनका विचार है कि राज्य को ऐसे कानूनों का निर्माण अवश्य करना पड़ेगा जिनसे आर्थिक असमानताएँ समाप्त हो सकें, रोजगार के अवसर उपलब्ध हों तथा सभी को शिक्षा और स्वास्थ्य के विकास के अवसर प्राप्त हों।[6]

उदारवाद केरूप
(FORMS OF LIBERALISM)

उदारवाद को हम मुख्य रूप से दो भागों में बॉट सकते है– 1. परम्परागत उदारवाद, 2. आधुनिक उदारवाद।

●परम्परागत उदारवाद– टी.एच.ग्रीन, जे.एस.मिल, जॉन लॉक प्रमुख परम्परागत उदारवादी विचारक हैं। परम्परागत उदारवाद का मूल आधार स्वतन्त्रता ही रहा है। परम्परागत उदारवादी विचारकों का मत है कि उदारवाद का जन्म निरंकुश व स्वेच्छाचारी शासन तथा व्यवस्था के विरूद्ध प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ है। प्रो. हॉवहाउस ने परम्परागत उदारवाद के सात मूल सिद्धान्त बताये हैं– (1) वैयक्तिक स्वतन्त्रता, (2) नागरिक स्वतन्त्रता, (3) वित्तीय स्वतन्त्रता, (4) पारिवारिक स्वतन्त्रता, (5) जातीय तथा राष्ट्रीय स्वतन्त्रता, (6) अन्तर्राष्ट्रीय स्वतन्त्रता और (7) राजनीतिक स्वतन्त्रता। परम्परागत उदारवाद के इन सिद्धान्तों के आधार पर इसे व्यक्तिवाद का सहयोगी दर्शन कहा जा सकता है। व्यक्तिवाद की भाँति ही परम्परागत उदारवाद व्यक्ति के जीवन में राज्य के हस्तक्षेप का विरोधी है। उदारवादी राज्य के कार्य–क्षेत्र को बहुत सीमित करने के पक्षधर हैं। उनका विचार है कि व्यक्ति स्वयं अपने हितों का सर्वोत्तम निर्णायक है। अतः राज्य का कार्य केवल व्यक्ति के जीवन, सम्पत्ति की रक्षा करना, अपराधियों को दण्ड देना तथा उन

समझौतो को लागू करना है जिनको व्यक्तियों ने स्वेच्छा से किया है। राज्य को शिक्षा, कृषि, व्यापार आदि पर नियन्त्रण रखने का अधिकार नहीं है क्योंकि इससे व्यक्ति के जीवन में अनावश्यक हस्तक्षेप होता है।

●**आधुनिक उदारवाद–** टी.एच.ग्रीन, लास्की, कीन्स, राल्स तथा लार्ड वेबरिज आधुनिक लोकतान्त्रिक उदारवाद के प्रमुख विचारक है। इनमें ग्रीन को आधुनिक लोकतान्त्रिक उदारवाद का प्रतिनिधि विचारक कहा जाता है। आधुनिक विचारक राज्य को आवश्यक बुराई नहीं, बल्कि व्यक्ति के विकास के लिए आवश्यक मानते हैं। ग्रीन के विचारानुसार राज्य साध्य नहीं वरन् साधन मात्र है राज्य में रहने वाले व्यक्तियों का पूर्ण नैतिक विकास। ग्रीन का मानना है कि राज्य का प्रमुख कार्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है। यद्यपि राज्य व्यक्ति को नैतिक नहीं बना सकता किन्तु व्यक्ति के नैतिक विकासमें आने वाली बाधाओं को दूर कर उसके नैतिक विकास में सहायता कर सकता है। आधुनिक उदारवाद राज्य के कार्यक्षेत्र में बहुत वृद्धि करता है। राज्य व्यक्ति के जीवन और सम्पत्ति की रक्षा करने के साथ–साथ अज्ञान, नशाखोरी, भीख माँगने की प्रथा आदि को दूर करने का प्रयत्न करेगा। राज्य श्रमिक वर्ग के हितों की रक्षा के लिए आवश्यक कानूनों का निर्माण करेगा। इसके अतिरिक्त राज्य जनता के स्वास्थ्य तथा शिक्षा के लिए अधिकाधिक सुविधायें प्रदान करेगा। लास्की, मैकाइवर तथा हॉबहाउस का विचार है कि राज्य निर्धनता, बेरोजगारी को समाप्त करने के लिए आर्थिक में हस्तक्षेप कर सकता है। अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने आर्थिक मंदी को दूर करने के लिए 'नव–निर्माण कार्यक्रम' को लागू किया था। इस कार्यक्रम को सकारात्मक उदारवाद का प्रतीक कहा जा सकता है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बेरोजगारी दूर करना, व्यापार और कृषि का विकास करना, वस्तुओं के मूल्य स्थिर रखना, श्रमिकों का शोषण रोकना था। इस प्रकार, आधुनिक उदारवाद एक ऐसी व्यवस्था का पक्षधर है जिससे पूँजीवाद और समाजवाद का समन्वय हो।[7]

निष्कर्ष–उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि उदारवादी विचारधारा एक महत्वपूर्ण विचारधारा है जो मानवता, व्यक्ति की स्वतन्त्रता तथा स्वतन्त्रता के सिद्धान्तों पर आधारित है। उदारवादी विचारधारा ने एक लम्बे समय तक राजनीतिक क्षेत्र को प्रभावित किया तथा वैचारिक तथा भौतिक जगत में क्रान्तिकारी परिवर्तनों को जन्म दिया। इसने सिद्ध कर दिया है कि आधुनिक युग का दर्शन 'नव–उदारवाद' ही हो सकता है।

❖❖❖

संदर्भ सूची :–

[1]. "Prinicipal of Political Science"- Dr. Pukhraj Jain & Dr. N.D. Arora, Page-105.

[2]. "To the present writer, it seems clear that liberalism as a political concept, is a compound of two separate elements, one of these is democracy, the other is individualism."
-W.M. Mc. Govern, Luther to Hitler, p. 11.

[3]. "it is not easy to describe much less to define for it is hardly less a habit of mind than a body of doctrines" -Laski

[4]. "Very simply, liberalism is the theory and practice of individual liberty, judicial defence and the constitutional state." - Sartori.

[5]. "Prinicipal of Political Science"- Dr. Pukhraj Jain & Dr. N.D. Arora, Page-106.

[6]. "Prinicipal of Political Science"- Dr. Pukhraj Jain & Dr. N.D. Arora, Page-108.

[7]. "Prinicipal of Political Science"- Dr. Pukhraj Jain & Dr. N.D. Arora, Page-112.

Reading Books - "Modern Political Thought"- Dr. B.L. Fadiya, Dr. Pukhraj Jain.